महाशिवरात्रि

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय
अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालय : माउण्ट आबू (राजस्थान)
क्षेत्रीय मुख्यालय : राजयोग भवन, सैक्टर 33-ए, चण्डीगढ़
फोन: 0172-2601339
Website : www.brahmakumarischandigarh.com
National Website : www.brahmakumaris.com

ईश्वरीय निमन्त्रण

परमात्मा शिव की ओर से हम आप की रूहानी बहनें व भाई निम्नलिखित कार्यक्रम में भाग लेने के लिए दिल से स्नेह से आपको परिवार सहित हार्दिक निमन्त्रण दे रहे हैं।

कार्यक्रम

आओ मनाएं सच्ची शिवरात्रि

प्रिय भाईयो और बहनों

हर साल शिवरात्रि का त्योहार हम सब बड़े प्यार, उमंग और श्रद्धा भाव के साथ मनाते हैं। भक्त लोग इस दिन व्रत रखते हैं, रात्रि जागरण करते हैं, शिवालयों में शिव की पूजा–भक्ति होती है और भोलेनाथ के गीतों से आकाश गूंज उठता है।

ज़रा सोचिए–क्या सत्य रहस्य है इस पर्व का? शिव को प्रसन्न करने की सहज विधि क्या है ? हम सुख–शान्ति और आनन्द से भर जाएं, हमारे पाप मिट जाएं और हमें मुक्ति–जीवनमुक्ति की प्राप्ति हो जाए।

यदि आप चाहते हैं कि शिव भगवान आपकी झोली सदा के लिए वरदानों से भर दें तो यह जानना बहुत जरूरी है कि परमात्मा शिव कौन हैं, उनसे हमारा क्या सम्बन्ध है, हमें उनसे क्या प्राप्ति होती है, वह प्राप्ति हमें कब और कैसे होती है, शिव जयन्ति का पर्व किस महत्वपूर्ण घटना का यादगार है और शिव का रात्रि से क्या सम्बन्ध है ?

परमात्मा शिव की सत्य पहचान

शिव भगवान सारी दुनिया की आत्माओं के पारलौकिक परमपिता हैं। वे सृष्टि रूपी नाटक के रचयिता एवं निर्देशक हैं। परमात्मा शिव ज्योति बिन्दु स्वरूप हैं।

भारत के कोने –2 में शिव के लाखों मन्दिरों में शिव की प्रतिमा को शिवलिंग के रूप में दिखाया जाना सिद्ध करता है कि उनका मनुष्यों व देवताओं की तरह शारीरिक आकार नहीं है, इसलिए उन्हें निराकार कहा जाता है। यही कारण है कि भारत के 12 प्रसिद्ध शिवालयों को ज्योतिर्लिंगम मठ के नाम से जाना जाता है। उनका दिव्य रूप ज्योतिबिन्दु है। उन्हें त्रिमूर्ति इसलिए कहा जाता है क्योंकि वे त्रिदेव–ब्रह्मा, विष्णु, शंकर के भी रचयिता हैं।

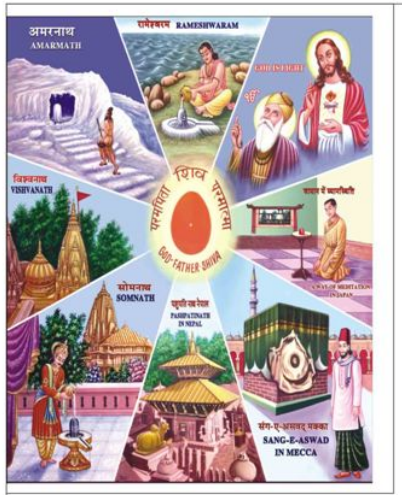

परमात्मा शिव सर्व आत्माओं के परमपिता हैं

परमात्मा शिव के ज्योति स्वरूप को अनेक धर्मों को मानने वाले लोग किसी न किसी रूप में स्वीकार करते हैं। भारत में तो अमरनाथ, विश्वनाथ, सोमनाथ, केदारनाथ, बद्रीनाथ इत्यादि स्थानों पर शिव के ज्योतिर्लिंग रूप का ही यादगार है। मुस्लिम धर्म के अनुयायी भी खुदा को नूरे ईलाही यानि नूर– प्रकाश स्वरूप मानते हैं। ईसा मसीह ने कहा कि परमात्मा दिव्य ज्योति है। मूसा को भी दिव्य प्रकाश का साक्षात्कार हुआ जिसे उन्होंने जिहोवा कहा। गुरूनानक देव जी ने भी एक ओंकार निराकार कहकर परमात्मा की महिमा की। इसलिए परमात्मा शिव एक धर्म के न होकर सभी धर्मों के परमपिता है।

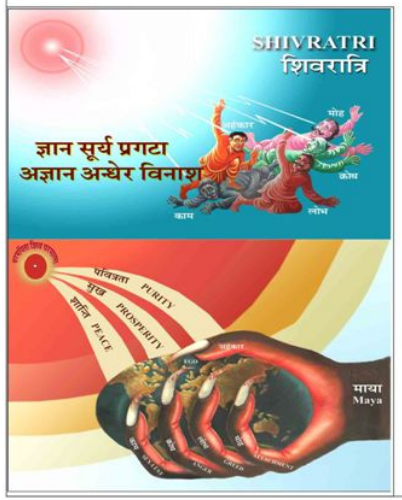

शिवरात्रि का रहस्य

शिवरात्रि अर्थात् शिवजयन्ति सृष्टि पर परमात्मा शिव के दिव्य अवतरण का यादगार दिवस है। इसलिए शिवरात्रि सभी पर्वों में महान पर्व है।

कितने आश्चर्य की बात है कि मनुष्यों, महान आत्माओं, देव आत्माओं का जन्म चाहे दिन में हुआ हो या रात में उसे जन्मदिन ही कहते हैं जबकि परमात्मा शिव के दिव्य जन्म को शिवरात्रि नाम से मनाते हैं।

वास्तव में रात्रि शब्द अज्ञानता, पापाचार, भ्रष्टाचार व बुराईयों का सूचक है। जब सारे विश्व में अधर्म, अन्याय, पापाचार, भ्रष्टाचार, अत्याचार व दुराचार सभी हदें पार कर देता है तब भगवान शिव अज्ञान की रात्रि में आते हैं और सभी को काम, क्रोध, लोभ आदि विषय–विकारों से छुटकारा दिलाते हैं। परमात्मा शिव के इसी दिव्य कर्तव्य की याद में हर साल शिवरात्रि पर्व धूमधाम से मनाया जाता है।

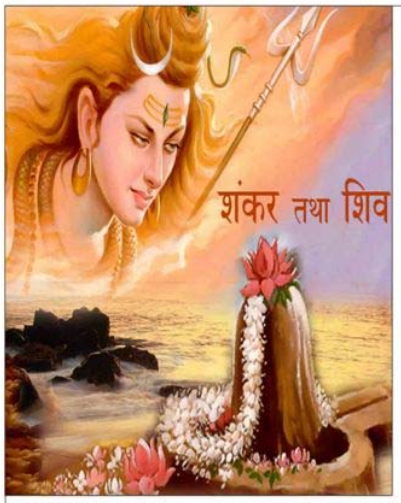

शिव व शंकर में महान अन्तर

1) परमात्मा शिव तो निराकार हैं जबकि शंकर सूक्ष्म शरीरधारी हैं।
2) शिव परमात्मा हैं जो परमधाम के निवासी हैं जबकि शंकर देवता हैं जो सूक्ष्म लोक में रहते हैं।
3) शिव सृष्टि के रचयिता हैं जबकि शंकर तो उनकी रचना हैं।
4) शिव को शिवलिंग के रूप में जबकि शंकर को तपस्या में बैठे दिखाया जाता है। परमात्मा को तपस्या करने की आवश्यकता नहीं क्योंकि वे सदा सम्पूर्ण व परम पवित्र हैं।
5) ज्योतिस्वरूप शिव की मान्यता सभी धर्मों में है जबकि शंकर को केवल भारतवासी ही मानते हैं।
6) परमात्मा शिव विश्व कल्याणकारी हैं जबकि शंकर विनाशकारी हैं। दोनों को एक मानने की भूल ने भक्तों को भ्रमित किया है। पाप केवल शिव भगवान को याद करने से ही कटते हैं।

खुशखबरी - शिव भगवान आए हुए हैं

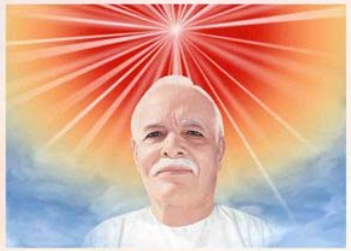

पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा बाबा

भक्तों की मनोकामना पूर्ण करने के लिए, भारत को पुनः स्वर्ग बनाने के लिए, पतित मनुष्यों को पावन बनाने के लिए, कलियुग को सतयुग में बदलने के लिए और जग से अज्ञान अंधकार खत्म करने के लिए स्वयं शिव भगवान भारत में आते हैं। भारत ही भगवान की जन्म भूमि व कर्म भूमि है।

निराकार परमात्मा को अपना कार्य करने के लिए साकार मनुष्य तन का आधार लेना पड़ता है। वे एक साधारण मनुष्य तन में परकाया प्रवेश कर अवतरित होते हैं। और उसे नाम देते हैं प्रजापिता ब्रह्मा। वे ज्ञान और राजयोग से मनुष्यात्माओं को पवित्र व गुणवान बनाते हैं।

जब इन्सान को इन्सान से ही डर लगने लगे–जब दुनिया के हालात इतने बिगड़ जाएं कि कोई भी व्यक्ति उन्हें ठीक न कर सके, जब चारों ओर चिन्ता, भय और निराशा का वातावरण बन जाए, जब मानव का चारित्रिक व नैतिक पतन चरम सीमा पर पहुंच जाए–ऐसे कलियुग के अन्तिम समय में परमात्मा शिव सत्य धर्म की स्थापना के लिए अवतरित होते हैं।

इस समय की सबसे बड़ी खुशखबरी यह है कि अभी सभी मनुष्यों के दुःखों का अन्त होने वाला है क्योंकि परमात्मा शिव भारत भूमि में अवतरित होकर सुख, शान्ति, प्रेम व आनन्द से भरपूर सतयुगी दुनिया की पुनर्स्थापना का कार्य गुप्त रीति से कर रहे हैं।

ब्रह्माकुमारीज़ संस्था का संक्षिप्त परिचय

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय पिछले 74 वर्षों से मानवता की सेवा में निःस्वार्थ भाव से लगा हुआ है। इस विद्यालय का मुख्यालय माउण्ट आबू में है तथा यह विद्यालय 135 देशों में 9000 से अधिक सेवाकेन्द्रों द्वारा कार्य कर रहा है। यहां विभिन्न धर्मों, संस्कृतियों व भाषाओं के व्यक्ति मूल्याधारित समाज बनाने के लिए सेवारत हैं। इस विद्यालय को संयुक्त राष्ट्र संघ (UNO) में गैर सरकारी संस्था (NGO) के रूप में परामर्शदाता का स्थान (Consultative Status) प्राप्त है।

राजयोग मेडिटेशन

तनाव–मुक्त, खुशनुमः जीवन जीने के लिए राजयोग (Meditation) की कला संस्था के सभी सेवाकेन्द्रों पर निःशुल्क सिखाई जाती है।

परमपिता परमात्मा शिव द्वारा आत्माओं रूपी बच्चों को ईश्वरीय स्नेह सहित निमन्त्रण

प्रिय आत्मा रूपी बच्चो,

तुमने मुझे ढूंढने के लिए जप–तप किये, मंत्र पढ़े, यज्ञ किये, फिर भी कहा मेरा मन भटकता है और स्वयं की शान्ति, खुशी, प्रेम को बाह्य चीजों में ढूंढते रहे! अब मैं स्वयं आया हूं। मुझे पहचानो और एक ऐसा घनिष्ट सम्बन्ध जोड़ो जिससे मेरी सर्व शक्तियां भी स्वाभाविक ही तुम्हारी हो जाऐंगी। मैं तुम सब आत्माओं का निराकार परमपिता शिव परमात्मा प्रजापिता ब्रह्मा के तन में प्रविष्ट होकर ज्ञान–योग की शिक्षा दे रहा हूँ ..... शीघ्र ही यह कलियुगी सृष्टि परिवर्तित होकर सतयुगी सृष्टि बन जाएगी। सतयुगी दुनिया में देवी–देवता बनने के लिए अपने को आत्मा समझ मुझ निराकार परमपिता शिव परमात्मा को याद करो और पावन बनो। फिर उलाहना न देना कि हे प्रभु! आप धरा पर आये लेकिन हमें परिचय ही नहीं मिला।

हे वत्सो! समय कम है, आलस्य अलबेलापन ठीक नहीं
याद रखो – अभी नहीं तो कभी नहीं

परमपिता शिव परमात्मा की मुख्य शिक्षाएं :

- बदला न लो, स्वय को बदल कर दिखाओ।
- जैसा संग–वैसा रंग, जैसा अन्न–वैसा मन।
- सदा खुश रहो और खुशियां बांटने रहो।
- बीती बातों का चिन्तन न कर, सकारात्मक चिन्तन करो।
- पवित्र बनो – योगी बनो।

Watch Awakening with Brahma Kumaris on various Channels

- प्रतिदिन आस्था चैनल पर सायं 7:10 से 7:40 तक
- प्रत्येक रविवार आस्था चैनल पर रात्रि 9:30 से 10:30 तक
- प्रतिदिन जागरण चैनल पर प्रातः 4:00 से 6:00 तक
- प्रतिदिन सहारा समय चैनल पर प्रातः 6:55 से 7:00 तक तथा दोपहर 2:50 से 3:00 तक